अंतरा-शब्दशक्ति

माँ मेरी जन्नत

काव्य संग्रह

डॉ. ओरीना अदा

(ग़ज़ल संग्रह)

डॉ.ओरीना अदा

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-25-4

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ ओरीना अदा

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Maa meri Jannat' by 'Dr. Orina Ada'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं।

मां मेरी जन्नत

शायरी ज़िन्दगी के उतार चढ़ाव की व्याख्या करती है सुख शांति प्यार मोहब्बत इंसानी हमदर्दी और समूची मानवता को न सिर्फ बरकरार रखती है बल्कि उसे बेहतर से बेहतर बनाने और संवारने में अहम किरदार भी अदा करती है। ग़ज़ल सृष्टि के हर रंग और खूबसूरत लहजे की अपने अंदाज़ में तर्जुमानी करती है।

एक शेर जो सब कुछ जितने अछूते अंदाज में कभी एक शेर ही इतना निराला हो जाता है। भिन्न भिन्न विषयों पर आधारित ग़ज़ल का हर शेर ज़िन्दगी के मुख्तलिफ पहलुओं को उजागर कर सकता है। अलहमदु लिल्लाह अभी सफर जारी है शायरी जो कि अस्ल में अपने तजुर्बात व एहसास को बिक्री कालिब में ढाल कर लफ्जों में पिरो कर बयान करने का नाम है।

मैने अपने इस संग्रह में अपने दर्द खुशी ग़म एहसास व मां की ममता तथा अपने हालात जज़्बात और तखय्युलात को बयान करने की कोशिश की है। साथ ही अपने अहद की सच्चाई को भी अपने ढंग से पेश करके हालात का आईना सामने रख कर अपनी अदबी और कलमी ज़िम्मेदारी के फरीज़े को भी निभाया है। मैंने इस संग्रह में छपी रचनाओं में यह भी ख्याल रखा है कि ज़बान (भाषा) की शैली सरल व आम फहम हो।

शायरी में व अर्थ हुस्न (सौन्दर्य) तभी पैदा होता है जब शायर या शायरा विवेकपूर्ण चिंतन संस्कारिक ज्ञान से परिपक्व हो। और उसकी रचना में इंसानी दर्द मंदी और तहज़ीब तथा शिष्टाचार की धड़कन सुनाई दे। मैंने अपने इन जज़्बात को अपनी रचनाओं में ढालने की भरपूर कोशिश की है मैं कहाँ तक कामयाब रही इसका फैसला कारेईन (पाठक) करेंगे,.. यह मेरी खुश किस्मती है कि मेरे इस ग़ज़ल संग्रह का प्रकाशन अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के द्वारा किया जा रहा है। इस मौके पर मैं सभी साहित्यकारों का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ ये काव्य संग्रह मेरी प्यारी मां श्रीमती हज्जन फहमीदा सुल्तान को समर्पित है। जिनकी दुआओं की वजह से मैं इस मकाम पर खड़े होने का साहस कर सकी। मैं अपने पति जनाब मज़हर हसन, बेटे सलमान की भी दिल की गहराईयों से शुक्रगुजार हूँ अब यह मेरा ग़ज़ल संग्रह 'मां मेरी जन्नत' इस उम्मीद के साथ कि पाठकों और साहित्यकारों को मेरी रचनाएँ पसंद आएंगी। खुदा करे कि मेरे अपने जज़्बात और एहसास पढने वालों के अहसास खुशी शाइस्तगी और नेक जज़्बात की मुंह बोलती तस्वीर बन जाएं। आखिर में अपने इन शेरों के साथ अपनी बात मुकम्मल करती हूँ।

(सच्चे जज़्बात से लबरेज़ यह शेर नज़्र है)
राह के पेच व ग़म तो डराते रहे,
हौसले मेरी हिम्मत बढ़ाते रहे,

तेरे सदमे ख़ुशी से उठाते रहे,
ज़िन्दगी फिर भी तुझ से निभाते रहे,
और खास तौर से मेरी प्यारी मां को मेरे,
साथ थी मेरी मां की दुआ उम्र भर,
हादसे मुझ से दामन बचाते रहे।

अल्लाह मेरी मां को सलामत रखे और उन्हें सेहत अता फरमाए। आप से भी दुआ की दरख्वास्त है।

डॉ.ओरीना अदा

अनुक्रमणिका

1. ममता की छाँव	**5**
2. औरत	**6**
3. आज़ाद	**7**
4. याद	**8**
5. ऐ माँ मेरी माँ	**9**
6. मदीने की शाम	**10**
7. दुश्मन भी नहीं,..	**11**
8. आप हैं,..	**12**
9. धूप	**13**
10.हौसला	**14**
11.क्या बना लूं मैं,..	**15**
12.तालिबा ए दुआ	**16**

ममता की छाँव

ममता की छाँव को कभी ढलते नहीं देखा |
मौसम की तरह रंग बदलते नहीं देखा ||

जो साहिब ए किरदार हैं, उनको कभी मैने,
मेअयार की चोटी से, फिसलते नहीं देखा ||

इस दौर का का इंसान बदलता है जितने रंग,
गिरगिट को भी रंग इतने बदलते नहीं देखा ||

जाने वफा जो तूने मुझे दर्द दिया है,
इस दर्द को सीने से निकलते नहीं देखा ||

ऐ जान ए 'अदा' इक सिवा तेरे किसी को,
मैंने तो मेरे दिल में ठहरते नहीं देखा ||

औरत

शोखी, हुस्न ओ लुत्फ, ज़ीनत का समां औरत से है,
प्यार, ममता व हया का गुलसितां औरत से है ||

पाँव की जूती न समझो भूल से भी तुम इसे,
क्योंकि ऐ लोगो ! वफा का आसमां औरत से है ||

मर्द की तसकीन भी, हिम्मत भी है, हमदर्द भी,
हक़ तो यह हर मर्द का नाम ओ निशां औरत से है ||

सादगी, सादा मिज़ाजी फाका मस्ती और सब्र,
हुस्न ए अख़लाक व हया की दास्तां औरत से है ||

आयशा व फातिमा, सारा व मरियम हाजरा,
इस चमन की ये बहार जाविदां औरत से है ||

आज़ाद

रूबरू तेरे खड़ा है अब तेरा सैय्याद कर,
क्यूँ कफस में चुप है बुल बुल कम से कम फरियाद कर ||

कब कहा मैंने कि तू दुनिया मेरी आबाद कर,
कम से कम इतना ही कर संगदिल मुझे बर्बाद कर ||

मत भटक चैन ओ सुकून के वास्ते दुनिया में तू,
अपने रब को याद कर और अपने दिल को शांत कर ||

सफ़ा ए हस्ती से हमको मिटाने के लिए,
ऐ ज़माने! फिर कोई ताज़ा सितम ईजाद कर ||

तुझको फुर्सत दे तेरी मसरूफियत थोड़ी अगर,
तो खुदा के वास्ते मुफलिस की तू इमदाद कर ||

रब को पाने का तरीका कितना आसां है 'अदा'
लौ लगा रब से तू ख़ुद को क़ैद से आज़ाद कर ||

याद

याद आज इस तरह आई मुझे हरजाई की,
छोड़ बैठी मुझे दुनिया मेरी तन्हाई की ||

दर्द देता है वो कब दिल की दवा देता है
खूब खोली है दुकान उसने मसीहाई की ||

इक ज़माना हुआ देखे हुए तस्वीर तेरी,
छीन ली आँखों ने गो रोशनी बीनाई की ||

धूप हो छाँव हो मौसम हो कोई भी
माँ ने हर वक़्त मेरी हौसला अफज़ाई की ||

साथ रह कर भी मेरे साथ न था वो तो भला,
बात किससे कहूँ ये बात है रुसवाई की ||

उसकी यादों ने 'अदा' अंजुमन ए दिल में मेरे
चाँद तारों की तरह अंजुमन आराई की ||

ऐ माँ मेरी माँ

है साथ तेरा प्यार मगर तेरी कमी है,
ऐ माँ मेरी इस बार मगर तेरी कमी है ||

आंगन में खुशी सारी हैं, सूने से फिर भी,
घर के दरो दीवार मगर तेरी कमी है ||

अब तो खुशी भी चुभने लगी है तेरे बगैर,
हर चीज़ है घर बार मगर तेरी कमी है ||

कानों में मेरे आज भी वो लोरियाँ तेरी,
गो बजती है झनकार मगर तेरी कमी है ||

दहलीज़ वही दर वही घर बार वही सब,
इन सबकी ए हक़दार मगर तेरी कमी है ||

ममता भरे आँचल कि वही छांव सुहानी,
याद आती है हर बार मगर तेरी कमी है ||

मदीने की शाम

क्या ही निज़ाम है दरे खैरुल अनाम का,
रुत्बा जो शाह का है वही है ग़ुलाम का ||

आठों ही पहर सांसों की तस्बीह पे या नबी,
करती हूं विर्द बस मैं तुम्हारे ही नाम का ||

खुलते ही लब फ़ज़ाओं में खुश्बू बिखर गयी,
छेड़ा है किसने ज़िक्र मदीने की शाम का ||

आका के कदम चूमते ही झूमते हुए,
बोसा ज़मीं ने ले लिया हो जैसे बाम का ||

मुंह अपना फेर लेगा वो गुलजारे खुद से,
प्यासा हो जो दीदारे रसूले अनाम का ||

रंजो बला खुद उस से लरज़ते हैं ऐ अदा !
करता है जो वज़ीफा दुरूदो सलाम का ||

दुश्मन भी नहीं,..

दुश्मन भी नहीं मेरा तरफदार भी नहीं,
दीवाना नहीं दिल मिरा हुशियार भी नहीं |

उफ! उनकी वो खामोशी कि इन्कार भी नहीं,
उल्फत है मगर होंठों पे इकरार भी नहीं ||

भूखों का पेट भर दे सियासत के सेहर से,
दुनिया में कोई ऐसा चमत्कार भी नहीं ||

उन रोजेदारों का भी रखा कीजिए ख्याल,
जिनको नसीब सेहरी ओ इफ्तार भी नहीं ||

अहले कलम ब जोर ए कलम अद्ल के लिए,
लड़ते हैं मगर हाथ में तलवार भी नहीं ||

मजबूर नहीं हूँ मुझे तस्लीम है मगर,
खुद अपने दिल तलक की मैं मुख्तार भी नहीं ||

तूफान ए जिंदगी में मैं इक ऐसा सफीना हूँ,
जिसका न कोई मांझी है 'पतवार भी नहीं ||

आंखों से कत्ल करने की उफ्फ उनकी वो "अदा"
मकतूल कोई उनसे खबरदार भी नहीं ||

सेहर :जादू , अद्ल :इंसाफ

आप हैं,..

हमदमो मूनिसो मेहरबां आप हैं,
राहते दिल हैं तस्कीने जाँ आप हैं ||

सिर्फ तस्कीने रुह व जिगर ही नहीं,
मेरी जां मेरा सारा जहां आप हैं ||

आपके बिन हकीकत ही क्या है मेरी,
गुल हूं मैं ओर मेरा गुलसितां आप हैं ||

एक पर्दे की मानिंद मुझमें सनम,
रूह और जिस्म के दर्मियां आप हैं ||

हिज्र की शब जो उठता है दिल में मेरे,
हल्का हल्का वो दर्दे निहां आप हैं ||

आप तो मुझमें रहते हैं और मैं सनम,
ढूंढती रहती हूँ कि कहाँ आप हैं ||

धूप से ग़म की अक्सर बचाता है जो,
इस अदा का वही सायबां आप हैं ||

धूप

रंजो-अलम की सर पे है ये चिलचिलाती धूप,
सेहरा ए गम में हाए ये दिल को जलाती धूप ||

चंद रोजा जिंदगानी है हर रोज बार बार,
देती है ये पयाम हमें आती जाती धूप ||

करती है पेश गोया इन्हें सुबहो का सलाम,
देखो बगौर फूलों के चेहरों पे आती धूप ||

खिड़की का पर्दा चीर के मुझको जगाती है,
अटखेली करती शोख भरी मुस्कुराती धूप ||

अपना पसीना पोंछ के मजदूर ने कहा ,
मैं तेरा साथी और तू है मेरी साथी धूप ||

मां का दुलार गोया कि सर्दी के जख्मों पे,
बे इख्तियार प्यार का मरहम लगाती धूप ||

बादल की मिस्ल मां की दुआ सर पे थी अदा,
फिर क्यूँ न मुझसे गम की ये दामन बचाती धूप ||

हौसला

है मेरे साथ हौसला मेरा,
कौन रोकेगा रास्ता मेरा ||

मुझको लोगो अपंग मत समझो,
हौसला है बहुत बड़ा मेरा ||

तुझ में हिम्मत है तो बुझा के दिखा,
ऐ हवा जलता ये दिया मेरा ||

बांहें फैलाए खुद मेरी मंजिल,
तकती रहती है रास्ता मेरा ||

मेरी हिम्मत ही से तो है कायम,
कामयाबी का सिलसिला मेरा ||

मैं हूँ दिव्यांग पर नहीं मजबूर,
साथ मेरे भी है खुदा मेरा ||

जोश मेरा बढ़ाती रहती है,
मेरी माँ की दुआ "अदा मेरा ||

क्या बना लूं मैं,..

कभी बिस्तर कभी चादर कभी तकिया बना लूं मैं,
तुम्हारी ज़ात को अपने लिए क्या क्या बना लूं मैं ||

ज़माने का कोई डर ही न हो मुझको मेरे दिलबर!
किनारा कर के दुनिया से तुझे अपना बना लूं मैं ||

कभी दिल चाहता है तुझ में गुम हो कर मैं रह जाऊँ,
कभी सोचूं कि तुझको अपना ही साया बना लूं मैं ||

तकल्लुम में मेरे घुल जाओ तुम शीर व शकर हो कर,
तुम्हें मेहबूब अपना अब लब व लहजा बना लूं मैं ||

निकल कर ऐ अदा जिस से कभी न जाऊँ मैं बाहर,
उसे अपने लिए वो प्यारी सी दुनिया बना लूं मैं ||

तालिबा ए दुआ

हवा के झोकों के मानिंद मुझ तक आता रहता है,
तुम्हारी याद का संदल मुझे महकाता रहता है ||

शब ए फुरकत कभी मैं दिल को बहलाती हूं रह रह कर,
कभी बेचारा दिल मेरा मुझे बहलाता रहता है ||

छुपाने के लिए इक अपनी नाकामी ज़माने से,
ना जाने खा मा खा क्यूँ मुझ पर झुंझलाता रहता है ||

जिसे सब इश्क़ कहते हैं यकीनन अश्कों को,
वो ज़रा सी दे के राहत उम्र भर तड़पाता रहता है ||

तुम्हारी दीद है या कि कोई जादुगरी दिलबर,
कोई जादू सा तुमको देख के छाता सा रहता है ||

तुम्हें मालूम है जिस दिन से ही दिल ने पाया है तुमको,
ये अपने आप पर उस दिन से ही इतराता रहता है ||

अदा माँ की दुआओं का ही सदका है कि खुद मुझ से,
हवादिस का हर इक तूफान घबराता रहता है ||

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. ओरीना अदा

शिक्षा - एम.ए. (अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र, अंग्रेजी, एम.एस.डब्लू (सोशल वर्क)), बी.एड., पी.एच.डी.

उर्द अदीब कामिल मुअल्लिम -

- 'शिक्षिका' ब्यूटीशियन, शायरा

मजमुआ ए कलाम -

1. अदा ए सुखन (एकल संग्रह)
2. आईना ए अदा (एकल संग्रह)
3. हम परिंदों से प्यार करते हैं (सांझा संग्रह)
4. साहित्य सागर (सांझा संग्रह)
5. अदब ए सुखन (सांझा संग्रह)
6. शब्दों के वंशज (सांझा संग्रह)

सम्मान

1. सृजन कामना पुरस्कार
2. शायर ए वतन
3. महेश जोशी गीतकार सम्मान
4. हजरत गाजी गाजीपुर सम्मान
5. कला निधि शिक्षक सम्मान
6. उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान
7. सरस्वती साहित्य प्रतिभा सम्मान
8. मातृशक्ति सम्मान
9. प्रेरणा सम्मान
10. सुभद्रा कुमार चौहान सम्मान
11. ग्लोवल आइकॉन अवार्ड

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-25-4

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com